अथ नित्य देव यज्ञ

दैनिक देव यज्ञ (साकल्य यज्ञ)

देव यज्ञ करने के लिए आप निम्न वस्तुएं यथा-संभव एकत्रित कर ले। जैसेः- यज्ञकुण्ड, आसन, चन्दन, जल, आचमन पात्र, अग्नि प्रज्जलवित साधन, कलश पात्र ढक्कन सहित, दीपक, घृत, कपूर, जल प्रोक्षण पात्र, घृत पात्र, सामग्रीः- रोगनाशक, पुष्टिकारक, सुगन्धियुक्त, मधु पदार्थ इन चारों गुणो से युक्त सामग्री, सामग्री पात्र, इदंमम पात्र, स्रुवा (चम्मच).

यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यतसहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोनह्यामि।।

यज्ञोपवीत परिवर्तित करने का मन्त्र

(निम्न मन्त्र से जीर्ण यज्ञोपवीत अर्थात पुरातन को उतार दें।)

ॐ एतवाद् दिनं पर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया जीर्णत्वात् परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्।।

तिलक स्वागत (यज्ञमान ब्रह्मा,अध्वर्यू व होता गणों का तिलक आदि से स्वागत करें)

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्ट-नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। यजुर्वेद २५.१९, सामवेद उतरार्चिक १९.२७

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैङ्गस्तुष्टुवाᳫ सस्तनूभिर्व्यशमेहि देवहितं यदायुः।। यजुर्वेद २५।२१, सामवेद उतरार्चिक १९.२६

अथ आचमनमन्त्र (यज्ञमान निम्न मंत्रों से तीन आचमन करें)

ॐ अमृतोपस्तरणमऽसि स्वाहा। ॐ अमृतापिधानमऽसि स्वाहा।

ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा। तैत्तरीय आरण्यक १०।३२।३५

अथ अङ्ग स्पर्शमन्त्र

(यज्ञमान बाएं हाथ में जल ले व दांए हाथ से मध्यमा और अनामिका दो अंगुलियों से अंगों को स्पर्श करें)

ॐवाङ्गमेआस्येऽस्तु। ॐनसोर्मेप्राणोऽस्तु। ॐअक्ष्णोर्मेचक्षुरस्तु। ॐकर्णयोर्मेश्रोत्रमस्तु। ॐबाह्वोर्मे बलमस्तु। ॐऊर्वोर्मे ओजोस्तु। ॐअरिष्टानिमेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु। पारस्कर गृह्य १।३।२५

दीप प्रज्जलवनम्

ॐ यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिँलोके स्वर्हितम।

तस्मिन्मां धेहि पवमानाऽमृते लोके अक्षित इन्द्रायेन्द्रो परिस्रव।।

कलश की स्थापना

ईशान कोण में करें। निम्न वेद मन्त्र का उच्चारण किया जाता है और वरुण को पुकारा जाता है। १३०५८२.०

ॐ वरुणश्चं ब्रह्माःवरुणो ब्रहे व्रत्तां वरुणो दिव्यां गतप्प्रह्वाःवरुण प्रह्वेः अस्वात मं

ब्रह्मेः यज्ञाः ।।   पूज्य पाद गुरुदेव

ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना अष्टक

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद भद्रं तन्न आसुव।।
यजुर्वेद ३०।३० ऋग्वेद ५.८२.५

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। यजुर्वेद १३।४

ॐ य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। यजुर्वेद २५.१३

ॐ यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य:ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। यजुर्वेद २५।११

ॐ येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्व स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। यजुर्वेद ३२।६

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।। ऋग्वेद १।१२१।१०

ॐ स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवाऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नऽध्यैरयन्त।। यजुर्वेद ३२।१०

ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽ अस्मान विश्वानि देव वयुनानि विद्वान।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम।। यजुर्वेद ४०.१६

अग्न्याधानमन्त्रः

ॐ भूर्भुवः स्वः।   गोभिल गृह्य सूत्र १।१।११

(निम्न मंत्रों से सुत्रा अथवा चम्मच में कपूर रख कर अग्नि प्रज्वलित करें)

ॐ अग्निमगिर्भिः हवामहे।

ॐ अग्न्म ब्रह्मा अग्नि देवत्वाम।   पूज्य पाद गुरुदेव

ॐ भूर्भुवःस्वःद्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठेऽग्निम ऽन्नादमऽन्नाद्यायादधे।। यजुर्वेद ३।५ (इस मन्त्र की समाप्ति पर अग्नि को यज्ञकुण्ड में हूत करें)

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सं सृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यज्ञमानश्च सीदत स्वाहा।।
यजुर्वेद १५।५४ (अग्नि को यज्ञकुण्ड में प्रदीप्त करें)

त्रिसमिधाधानम्

ॐ अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमऽग्नये जातवेदसे-इदन्न मम।।
आश्वालयन गुह्या १।१०।१२ (इस मन्त्र से प्रथम समिधा)

ॐ समिधाग्नि दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। अस्मिन हव्या जुहोतन।। यजुर्वेद ३।१

ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नेय जातवेदसे स्वाहा।।
इदमऽग्नये जातवेदसे-इदन्न मम।। यजुर्वेद ३।२ (इन दो मन्त्रों द्वितीय समिधा)

ॐ तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठय स्वाहा।।
इदमऽग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम।। यजुर्वेद ३।३ (इस मन्त्र से तृतीय समिधा)

पंच घृताहुति (इस मंत्र से यज्ञमान घृत से पाँच आहुति दें।)

ॐ अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमऽग्नये जातवेदसे-इदन्न मम।।
आश्वालयन गृह्या १।१०।१२

जल प्रोक्षण

ॐ अदितेऽनुमन्यस्व:। (इससे यज्ञ कुण्ड के पूर्व दिशा में दक्षिण से उत्तर की ओर)
ॐ अनुमतेऽनुमन्यस्व:।(इससे यज्ञ कुण्ड के पश्चिम दिशा में दक्षिण से उत्तर की ओर)
ॐ सरस्वत्यऽनुमन्यस्व:। (इससे यज्ञ कुण्ड के उत्तर दिशा में पश्चिम से पूर्व की ओर)
गोभिल गृ. प्र. १. ख.३. सूक्त १।३

ॐ देवसवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्व केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।।(यज्ञ वेदी की परिकर्मा करें)

आघारवाज्यभागहुति

(केवल यज्ञमान घृत से आहुति दें)

ॐ अग्नये स्वाहा। इदमऽग्नये-इदन्न मम।। (उत्तर दिशा में पश्चिम से पूर्व की ओर)
ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय-इदन्न मम।।(दक्षिण दिशा में पश्चिम से पूर्व की ओर)
गोभिल गुह्य सूत्र १।८।५.

आज्यभागाहुति

(केवल यज्ञमान घृत से आहुति दें यज्ञ कुण्ड के मध्य में)

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये-इदन्न मम।।
ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय-इदन्न मम।। यजुर्वेद २२।
ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।
ॐ उदानाय स्वाहा। पूज्यपाद गुरुदेव

महाव्याहृत्याहुति

(केवल घृत से)

ॐ भूरऽग्नये स्वाहा। इदमऽग्नये-इदन्न मम।।
ॐ भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे-इदन्न मम।।
ॐ स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय-इदन्न मम।।
ॐ भूभुर्वस्वरऽग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा। इदमऽग्निवाय्वादित्येभ्यःइदं न मम।।
गोपथ १।८।४

प्रातःकाल आहुति के मन्त्रः

(होता गण भी साकल्य से आहुति प्रारम्भ करें)

ॐ सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य स्वाहाः।
ॐ सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहाः।
ॐ ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा। यजुर्वेद ३।९

ॐ सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्योः वेतु स्वाहा।। यजुर्वेद ३।१०

सांयकाल आहुति के मन्त्रः

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरऽग्निः स्वाहा।

ॐ अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरऽग्निःस्वाहा।यजुर्वेद ३।९(इस आहुति को मन में उच्चारण करके आहुति दें)

ॐ सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।। यजुर्वेद ३।१०

दोनों समय की आहुतियां

ॐ भूरऽग्नये प्राणाय स्वाहाः। इदमऽग्नये प्राणाय इदन्न मम।।

ॐ भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।

ॐ स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।।

ॐ भूर्भुवः स्वऽर्ग्नि वाय्वादित्येभ्यः प्राणऽपान व्यानेभ्यः स्वाहा।
इदमऽग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणऽपानव्यानेभ्यः इदन्न मम।। तैत्तरीय आरण्यक १०।२

ॐ आपोज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।। तैत्तरीय आरण्यक १०।१५

ॐ यां मेधां देवगणा पितरश्चोपासते। तयामामद्य मेधायाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।
यजुर्वेद ३२।१४.

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद भद्रं तन्न आसुव।। यजुर्वेद ३०।३०

ॐ अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान विश्वानि देव वयुनानि विद्वान।
युयोध्यऽस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।। यजुर्वेद १६।४

तीन आहुति गायत्री मंत्र से

ॐ भूर्भुव: स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम। भर्गो देवस्य धीमही धियो यो नः प्रचोदयात।

ॐ भू: स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ मह: स्वाहा। ॐ जन: स्वाहा। ॐ तप: स्वाहा। ॐ सत्यम स्वाहा। पूज्यपाद गुरुदेव

तीन, पाँच या ग्यारह आहुति महामृत्युंजय मंत्र से

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

पूर्णाहुति

ॐ सर्वᑌवैपूर्णᑌस्वाहा।। ॐ सर्वᑌवैपूर्णᑌस्वाहा।। ॐ सर्वᑌवैपूर्णᑌस्वाहा।।
शत पथ ५।२।२।१

शान्ति पाठ

ॐ द्यौःशान्तिरऽन्तरिक्षᑌशान्तिःपृथिवी शान्तिरापःशान्तिरोषधयशान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वᑌशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। यजुर्वेद ३६।१७